Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 11/March/2023 IJRAW: 2023; 2(4):155-156 Accepted: 05/April/2023

समकालीन कविता में सामाजिक संवेदना

*[1]Dr. Mamta Devi

*[1]Assistant Professor, Department of Hindi, SPS Janta College Sarswati Nagar, Haryana, India.

सारांश

मनुष्य समाज और प्रकृति की विशिष्ट रचना है जो अपनी कल्पनाओं और सृजनशीलता के आधार पर प्रकृति के विभिन्न रूपों एवं दृश्य को अपने हृदय धरातल पर अनुभव करता है यह अनुभव वह अपनी कविताओं के स्वरों के माध्यम से अभिव्यक्त करता है युग परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य में भी परिवर्तन देखा जा सकता है । कवि ने समाज और व्यक्ति गत जीवन में हुए परिवर्तनों को अपने रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है। समकालीन कवियों ने समाज की वास्तविक तस्वीर को कविता के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया है आधुनिक युग की कविता में नई चेतना नई संवेदना नये बिम्बों एवं नवीन कल्पनाओं का समावेश है। समकालीन कविता में अनेक स्वरों की गुंजन प्रतीत होती है कहीं कुंठा, संत्रास का स्वर तो वहीं प्राकृतिक सौंदर्य, रहस्यवादी व्यंगात्मक स्वर सुनाई देते हैं।

मूल शब्दः समकालीन-वर्तमान समय, परिवर्तन-बदलाव, संवेदना-भावना, जनतंत्र-जनता का शासन

प्रस्तावना

मनुष्य समाज और प्रकृति के विशिष्ट रचना है जो अपनी कल्पना और स्रजनशीलता के आधार पर प्रकृति को विभिन्न रूपों के दृश्यों को अपने हृदय के धरातल पर अनुभव करता है। ये अनुभव हमें अपनी कविता के स्वरों के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। युग परिवर्तन के आधार पर कविता ने समाज और व्यक्ति के परिवर्तित स्वरूप को अपने भीतर समेटा है। कविता ने समाज की वास्तविक तस्वीर को समकालीन कवियों ने बखूबी समटने का प्रयास किया है। समाज की स्थिति कवि को निरंतर गतिमान बनाए रखती है। कविता में कवि समाज से जो कुछ भी चुनता है वह अपनी कल्पनाओं और अपनी अनुभूतियों के माध्यम से अपने पन्नो पर उकेर देता है। समकालीन कविता आधुनिक युग के विकास की नई चेतना, नई सवेंदना, नई बिनबो एवं नवीन कल्पनाओं का समावेश है।

डॉ हुकुमचंद रामपाल के अनुसार "समकालीन कविता का आरंभ सन 1964 के बाद माना जा सकता है। साठोत्तरी कविता और समकालीन कविता को पर्याय मानना उचित नहीं है। समकालीन कविता युगबोध का आधार है। डॉ0 राघव प्रकाश के अनुसार "समकालीन कविता घटना अथार्त दृश्यों की कविता है|" डॉक्टर संजय जैन के अनुसार "समकालीन कविता अपने साथ अन्तद्रन्तो, अन्तर विरोधो तथा युगीन सामाजिक संघर्ष को समेटे हुए हैं।"

डॉ वीरेंद्र के अनुसार "समकालीनता का दृश्य अनेक आयामी है और इसमें विचारों की अंतर्धारा भी अनेक आयामी है और इसमें विचारों की धारा भी अनेक आयामी है जो ज्ञानात्मक संवेदना को रचनातम्क संदर्भ देती है|" समकालीन कविता में अनेक स्वरों की गुंजन प्रतीत होता है जहा कहीं कुंडा, सन्यास, पीड़ा का स्वर है तो कहीं प्रकृति सौंदर्य,रहस्यवादी व्यंगात्मक स्वर सुनाई पड़ते है

समकालीन कविता में समाज जो परिवर्तन आए उनका स्वरूप कविता में देखा जा सकता | मूल्यों में तीव्रता से परिवर्तन हुए है | समकालीन कविता में समाज की राजनीतिक व्यवस्था पर सुदामा पांडे धूमिल ने अपनी कविता से व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति दी |

- आपने हैं संसद
- तेली कि वह घानी है
- जिसमें आधा तेल है
- और आधा पानी है
- दरअसल, अपने यहाँ
- जनतंत्र का एक ऐसा तमाशा है
- जिसकी ज्ञान मदारी की भाषा है

धूमिल (पटकथा) "संसद से सड़क तक" समकालीन कविता में मनुष्य के संघर्ष को स्वर मिला है। जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदला है। मदन शर्मा ने अपनी कविता "नई सुबह की अगवानी " में मानव को सचेत किया है।

- जान ले संघर्ष ही यह
- दर्द को सोपान है अब
- आस्था संकल्प से ही
- राह की पहचान है अब

आज समाज में राजनेता केवल मतदाताओं को रिझाने में लगे हैं। कभी जातिवाद, धर्म, संप्रदाय के नाम पर विष घोल रहे हैं। भारत की राजनितिक, सामाजिक स्तिथि में आये ठहराव के कारण कवि

*Corresponding Author: Dr. Mamta Devi

निराशा की और बढ़ चला है | लेकिन कवि ने इन निराशा के बाहर आशाओं के सूरज को खोजने का प्रयास किया है कैलाश वाजपेयी की एक कविता "परास्त बुद्धिजीवी का वकतव्य" इन कवियों की मानसिकता का सही प्रतिनिधितव करती है |

- न हमारी आँखे है आत्मरत
- न हमारे होंठो पर शोकगीत
- जितना कुछ उब सके उब लिए
- हमे अब किसी भी व्यवस्था में डाल दो
- "राजनीति चौराहे पर हतप्रभ सी खड़ी हुई है ।
- आज अहिंसा के कंधे चढ़ हिंसा बढ़ी हुई है।

यह सजगता समकालीन गतिकाव्य में पूरी तरह व्याप्त है तथा इस तथ्य को प्रमाणित करती हैं कि गीतकार कवि अपनी व्यथा से समाज की व्यथा को अनुभव करते हैं।

- अपनी व्यथा छुपा
- सबका दुख गाया
- धुप बुझी उसकी
- गहराई छाया

डॉ श्याम नंदन किशोर मानते है की कविता की आयु कवि की व्यक्तिगत प्रजनन शक्ति, प्रतिभा, अनुभूति व्यापकता और संक्रमणशीलता की क्षमता पर निर्भर करती है।

- गली शहर सब लगे पराये
- मन का भेद न खोले भाषा
- कैसी हवा चली, बदली है
- जीवन मूल्य की परिभाषा।

आंतरिक मूल्य से आप मुझसे अपनी पीड़ा को शब्दों में बयान करने की स्थिति में नहीं होता। वह दृश्य बहुत ही अजीब होता है। धूमिल कहते है कि मनुष्य में कोई अंतर नहीं होता। हम सब समान है जो समाज में फैले अंधविश्वास को, ऊँच-नीच और अस्पर्श्यतापर व्यग्य करते हुए कहते है कि

- बाबूजी सच कहूँ मेरी निगाह में
- ना कोई बड़ा है ना कोई छोटा
- मेरे लिए हर आदमी एक जोड़ी जूता है।

समाज में हर रिश्ता अपनी अस्तित्वता जैसे ढो रहा है | विश्वास खो गया है। चालाकी बेईमानी का बसेरा है| सम्बनधो की चादर जर्जर हुई पड़ी है। अपनापन तो एक दिखावा है। कुछ स्त्रियाँ प्रेम करती है

- वर्दी से, बाकी नामर्दी से
- मैं हंसता हूँ गाता हूँ
- रोता हूँ, चीखता हूँ
- प्यार करता हूँ गालियां देता हूँ
- लेकिन हर स्थिति में वैसा का वैसा ही रह जाता हूँ
- जैसे मैं मुर्दों के बीच में हूँ

समकालीन कविता में आम आदमी के जीवन को स्वर बन्ध करने का सुंदर प्रयास किया गया है।

निष्कर्ष

समकालीन कविता में समाज के यथार्थ रूप का चित्रण ही नहीं बल्कि समाज का वास्तविक स्थिति के प्रति जागरुक करने का प्रयास कवियो ने किया। कविता में आपसी संबंधों के दोगलेपन, विश्वासघात और मूल्यहीनता का भी स्वर प्रदान किए गए है| समकालीन कविता में कवियो ने समाज के हर पक्ष को अपनी कविता में स्वर प्रदान करने का अथक प्रयास किया है कविता के पर्वतक कहे जाने वाले कवि सुदामा पांडे धूमिल की रचना को व्यंगात्मक स्वर अधिक चोट करते हुए प्रतीत होते हैं। समकालीन कविता समाजिक संवेदना के स्वर में मूल्य हीनता, पीड़ा, अनेतिकता आदि के प्रति आक्रोश की ऊंची ऊँची लहरें स्पष्ट देखी जा सकती है|

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हुकुम चन्द राजपाल, समकालीन कविता की कथ्यचेतना
2. संजय जैन, समकालीन कविता की कथ्यचेतना
3. वीरेंद्र सिंह, समकालीन कविता
4. मदन शर्मा "राकेश" समर्पित जिंदगी तुमको
5. प्रहलाद राजवेदी "पग में पिन" पराग प्रकाशन, दिल्ली
6. डॉ रामस्नेही लाल शर्मा "यायावर" समकालीन गीतिकाव्य संवेदेना और शिल्प
7. इन्दिरागोड सुधियो का कुम्बपर्व
8. सुधामापांडेय (धूमिल), मोचीराम
9. कैलाश वाजपेयी "परास्त बुद्धिजीवी का वकतव्य"